P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-11* (Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

डॉ० श्याम सिंह शशि की यायावरी पत्रकारिता

शक्ति शर्मा
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
एच. एन. बी. गढवाल
विश्वविद्यालय,
उतराखण्ड

सारांश

डॉ० श्याम सिंह शशि एक प्रबुद्ध साहित्यकार ही नहीं अपितु प्रखर पत्रकार भी हैं। बचपन के दिनों से ही वे अनेक पत्र–पत्रिकाओं से जुड़ चुके थे। सन् 1968 में वे भारत सरकार के सुप्रसिद्ध पत्र सैनिक समाचार के सम्पादक नियुक्त हुए। डॉ० शशि देहरादून से प्रकाशित हिमालय मासिक पत्रिका के भी सम्पादक रहे। 'वन्य जाति' 'कन्टेम्परेरी सोशल सांइसेज', 'शब्द लता' आदि विभिन्न पत्रिकाओं के सम्पादन मंडल में भी रहे ।देहरादून से प्रकाशित 'हिमालय' मासिक पत्रिका के वे सम्पादक रहे हैं। 'वन्यजाति', अनुवाद, कन्टेम्परेरी सोशल सांइसेज शब्दलता, आदि पत्रिकाओं के सम्पादक मण्डल में रहे हैं। सरकारी स्तर पर आप आज भी 21 पत्र–पत्रिकाओं के प्रमुख हैं। आजकल (उर्दू–हिन्दी) बाल भारती, योजना (12 भाषाओं में प्रकाशित), कुरुक्षेत्र (हिन्दी–अंग्रेजी), इंडियन फोरम रिव्यू, एम्प्लाय मेंट न्यूज, रोजगार समाचार आदि पत्रों का मार्गदर्शन करते हैं। अन्य मंत्रालयों के अनेक पत्र–पत्रिकाओं के परामर्शदाता मण्डल में हैं। डॉ० श्याम सिंह शशि पत्र–पत्रिकाओं से बाल्यकाल से ही जुड़ गए थे। उनकी बाल्यकाल में सृजित की गई कविताओं को पत्र–पत्रिकाओं में खूब स्थान मिलता था। उसी समय से पत्रकारिता के प्रति उनमें रूझान पैदा हो गया था। धीरे–धीरे वे साहित्य साधना में वे इतने लीन हो गए कि बाल्यकाल की पत्रकारिता का यह अंकुर एक विशाल वट वृक्ष बन गया जिसकी टहनियॉ पत्रकार प्रकाशक और लेखक के रूप में चारों तरफ फैल गई हैं। डॉ० श्याम सिंह शशि की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि एक नहीं अनेक भाषाओं में लेखन व पत्रकारिता की। हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा के वे महारथी हैं। स्वयं यायावर बनकर, उनके बीच रह कर, हिमालय की खड़ी चढ़ाई पर चढ़कर, उनके जैसा जीवन व्यतीत कर डॉ० शशि ने एक नई विधा यायावरी पत्रकारिता को जन्म दिया है। यायावरों के दुख दर्द को, उनके आस्तित्व की कहानी को आम आदमी तक पहुॅचाया है या यूॅ कह लिया जाए कि यायावरी पत्रकारिता जन्मदाता डॉ० श्याम सिंह शशि है तो इसमें मतभिन्नता ना होगी। यदि डॉ० श्याम सिंह शशि के सम्पादकीय पुस्तकों व सम्पूर्ण साहित्य को पढ़ा जाए तो उसमें यायावरों के प्रति एक वेदना कहीं न कहीं जरूर झलकती है। आज साहित्य और पत्रकारिता का उद्देश्य मात्र सूचना देने तक सीमित नहीं हैं इसके क्षेत्र, परिभाषाएँ मापदण्ड आकलन, विशेषण कार्यशैली सब कुछ बदल गया है। आज के मानव की चेतना परिकल्पनात्मक हो गई है। यायावरी पत्रकारिता से अभिप्राय है उन यायावरों पर प्रकाश डालना जो सदियों से इस जंगल से उस जंगल, एक देश से दूसरे देश में भटक रहें हैं। उनके जीवन, उनकी प्रवृति, उनकी समस्याओं, को अपनी कलम के माध्यम से सरकार तथा आम–आदमी तक पहुॅचाना यायावरी पत्रकारिता कहलाती है। डॉ० श्याम सिंह शशि ने यायावरों के साथ को स्वयं उनके बीच रह कर महसूस किया। पत्र–पत्रिकाओं में उनके विषय में खूब लिखा। उन पर विस्तृत शोध साहित्य दिया। कन्दरों में छुपे यायावरों को डॉ० श्याम सिंह शशि ने अनेक समाचार पत्रों में स्थान दिया। अपने साहित्य का हिस्सा बनाया । उनके जीवन की वास्तविकताओं को पाठक के सामने लाने का प्रयत्न किया है और उनके पक्ष में खूब लिखा है। कपोलकल्पित नहीं अपितु उनके साथ रह कर सब कुछ भोगकर यायावरी पत्रकारिता को जन्म दिया है ।

मुख्य शब्द : डॉ० श्याम सिंह शशि, यायावरी पत्रकारिता।

प्रस्तावना

भारतीय पत्रकारिता की जन्म स्थली कलकत्ता को माना जाता है। भारत के इसी शहर से भारतीय पत्रकारिता अपने बाल्यकाल को पार करती हई अनेक संघर्षों का सामना करती हुई अपने यौवन काल में पहुॅची। यह वह समय था जब भारत अंग्रेजों के आधीन था। प्रत्येक भारतीय गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था एवं अंग्रेजों का मोहताज था। यह वह दौर था जब अंग्रेजी भाषा

का ज्ञान होना एवं उसे संस्कारों में अपनाया जाना आधुनिकता की झलक समझा जाता था। भारत में इस आधुनिकता का नवजागरण का नेतृत्व राजा मोहन राय ने किया जो एक समाज सुधारक एवं प्रगतिवादी चिंतन व दृष्टिकोण वाले व्यक्ति थे। संस्कृत, अरबी, फारसी आदि भाषाओं के वे महारथी थे एवं अंग्रेजी भाषा से उन्हें विशेष मोह था या यूँ कह लीजिए कि अंग्रेजी में भी वे दिलचस्पी रखते थे। इसी कड़ी में स्वामी विवेकानन्द, रामकृष्ण, परमहंस रवीन्द्रनाथ टैगोर व अरविन्द घोष आदि ने तत्कालीन भारतीय जन जीवन में अध्यात्मिकता तथा मानवीयता का प्रचार व प्रचार किया। ब्रिटिश सरकार के अनेक विरोधों के बाद भी भारत में मुद्रण कला एवं पत्रकारिता ने जन्म ले लिया जो बाद में भारतीय पत्रकारिता की नींव की ईंट साबित हुआ।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रत्येक साहित्यकार को चाहिए कि वह सजग पत्रकार बनकर अपनी ऑखों को खुली दृष्टि दें। समाज की समस्याओं को महसूस करे। इन समस्याओं से जूझ रही पीढ़ियों को अपनी लेखनी के माध्यम से जग जाहिर करे तथा तत्कालीन समाज को सोचने पर मजबूर कर दें। प्रत्येक साहित्यकार एवं पत्रकार का यह दायित्व है कि वह समाज को सही जीने की राह दिखाए ।

सुप्रसिद्ध पत्रकार आलोक मेहता ने अपनी पुस्तक भारत में पत्रकारिता में लिखा है कि भारत में पत्रकारिता की नींव अंग्रेजों ने ही डाली थी। इन्होंने इसके साक्ष्य हेतु अपनी उक्त कथित पुस्तक में कुछ पक्तियॉ प्रस्तुत की हैं जो इस प्रकार हैं। ''29 जनवरी सन् 1780 को एक अंग्रेज के संपादकत्व से प्रथम भारतीय पत्र प्रकाशित हुआ जिसका नाम था। हिकीज बंगाल गजट' या कलकता जरनल एडवरटाइजर धीरे–धीरे कुछ वर्षों के अन्तराल में यहॉ पर 'इण्डिया गजट', 'कैलकटा गजट' और 'बंगाल जरनल' जैसे पत्रों का प्रकाशन हुआ। इसी क्रम में सन् 1785 में ओरियण्टल मैगजीन और कैलकेटा एक्यूजमेन्ट नामक पत्र भी निकले । आगे चलकर सन् 1791 में इण्डिन वर्ल्ड 1795 में 'इण्डिन हैरल्ड़' और 1818 में कलकता से ही 'कलकता जरनल' का प्रकाशन हुआ।''[1] अनेकानेक अखबारों का प्रकाशन तो हो गया किन्तु अंग्रेजी हुकुमत की दमनकारी नीति बढ़ती चली गई। भारत में निकलने वाले समाचार पत्रों को वे कभी भी स्वीकार नहीं कर पाए। वे सदैव इन्हें शंका की दृष्टि से देखते थे। वे समाचार पत्र जिन्हें क्रिश्चियन मिशनरियों द्वारा संचालित किया जाता था। उन्हें अंग्रेजी सरकार सदैव अच्छी नजरों से देखती थी। यही कारण था कि हिन्दी के प्रमुख केन्द्रों से भी ईसाई समाचार पत्रों का प्रकाशन व प्रसारण फलीभूत होने लगा। ये पत्र भारत की सभ्यता एवं संस्कृति पर कुठाराघात कर उसे समूलतः नष्ट करने की फिराक में लगे थे। राजा मोहन राय का हृदय इस कौठाराघात को सहन नहीं कर पाया। उन्होंने पत्र प्रकाशन के लक्ष्य को स्पष्ट करते हुए कहा कि ''मेरा उद्देश्य मात्र इतना ही है कि मैं जनता के सामने ऐसे बौद्धिक निबन्ध उपस्थित करूँ जो उनके अनुभव को बढाए और सामाजिक प्रगति में सहायक सिद्ध हो। मैं अपनी शक्तिभर शासकों को उनकी प्रजा की परिस्थितियों का सही–सही परिचय देना चाहता हूँ, ताकि शासक जनता को अधिक से अधिक सुविधा देने का अवसर पा सकें और जनता उन उपायों से अवगत हो सके, जिसके द्वारा शासकों से सुरक्षा पाई जा सके तथा अपनी उचित मॉगे पूरी कराई जा सके। राजा मोहन राय के विनयशील भाव ब्रिटिश सरकार के हृदय मे तिल भर जगह भी नहीं बना पाए। भारत के पत्र प्रकाशन सदैव उपेक्षित होते रहे। उनसे सौतेला व्यवहार किया जाता रहा। भारत में पत्रकारिता के शैशवकाल में ब्रिटिश सरकार पत्रों को अंग्रेजी भाषा में छपवाती थी। इन समाचार पत्रों का उद्देश्य मात्र जनता का मनोरंजन करना व उन्हें सूचनाऍ प्रेषित करना भर था।''[2] उनके ही शब्दों में –'' प्रैस को आजादी देना हमारे लिए खतरनाक है। विदेशी शासन और समाचार पत्रों की स्वतन्त्रता दोनों एक साथ नहीं चल सकते। स्वतन्त्र प्रैस का पहला कर्तव्य क्या होगा? यही न कि देश को विदेशी चुंगल से स्वतन्त्र कराया जाए? इसलिए अगर हिन्दुस्तान में प्रैस को स्वतन्त्रता दे दी गई तो उसका परिणाम होगा, वह दिखाई दे रहा है।''[3] 1818 में 'दिग्दर्शन' बंगाली भाषा में पहला भारतीय भाषा का समाचार पत्र प्रकाशित हुआ । तत्पश्चात् 1822 में 'समाचार चन्द्रिका' का प्रकाशन हुआ। हिन्दी के समाचार पत्रों का भी योगदान पत्रकारिता के प्रतिष्ठापन में विशेष रूपेण अग्रणीय रहा है। यह बात सर्वमान्य हो चुकी है कि हिन्दी पत्रकारिता का श्रीगणेश 'उदन्त मार्तण्ड' के प्रकाशन के साथ सन् 1826 में हुआ। सन् 1831 के पार्लियामेन्टरी रिकार्ड में देशी पत्रों का जो विवरण दिया गया था, उसमें प्रथम बार 'उदन्त मार्तण्ड' व 'बंगदूत' नामक दो हिन्दी पत्रों का अस्तित्व उल्लेखनीय है। भारत में हिन्दी पत्रकारिता की शुरूआत करने वाले प्रथम पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' के 79 अंक ही निकल पाए क्योंकि अंग्रेजों के शासन काल में ब्रिटिश सरकार की शक्ति के परिणाम स्वरूप यह अधिक देर तक जीवित न रह सका 4 दिसम्बर 1927 को यह मरणासन की स्थिति में पहुॅच गया और इसे बन्द कर दिया । 4 दिसम्बर 1927 को यह अन्तिम पद्यांश 'उदन्त मार्तण्ड' में अपना स्थान ले पायाः–

''आज दिवस लौं उग चुक्यो मार्तण्ड उदन्त
अस्ताचल को जात है, दिनकरदिन अब अन्त।''[4]

ये पंक्तियॉ 'उदन्त मार्तण्ड' में छपी अन्तिम पंक्तियॉ थी। भारतीय इतिहास गवाह है कि स्वतन्त्रता आन्दोलन में जनमत बनाने में हिन्दी पत्रकारिता का स्थान अद्वितीय रहा है। जिसका कोई दृष्टिकोण देश भक्ति की भावना से परिपूर्ण था। जिन्हें ये समाचार पत्र व पत्रिकाऍ आम जनता तक पहुॅचाने में सफल सिद्ध हुए। 'उदन्त मार्तण्ड' व 'बंगदूत' के ठीक बाद 1854 में कलकत्ता से एक दैनिक प्रकाशित हुआ, जिसका नाम था। 'समाचार सुधावर्षण' 'मार्तण्ड', 'मालवा अखबार', 'ज्ञानदीप', 'बनारस अखबार', 'ज्ञान दीपक भास्कर', 'बुद्धि प्रकाश', 'प्रजा हितैषी', आदि अनेक समाचार पत्र 1868 के दौर में प्रकाशित होने लगे थे। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा 'कविवचन सुधा' का सम्पादन किया गया। पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा सम्पादित पत्रिका 'सरस्वती' को 20वीं शताब्दी के सर्वश्रेष्ठ पत्रिकाओं में एक है। सन् 1849 में भरतपुर से प्रकाशित समाचार पत्र 'महजहरूल सरूर' को राजस्थान

का सर्वप्रथम समाचार पत्र माना जाता है। यह समाचार पत्र दो भाषाओं में प्रकाशित होता था जिसमें से हिन्दी एक भाषा थी। पूर्णरूप से हिन्दी का प्रथम दैनिक 1885 में 'हिन्दोस्थान' रामपाल सिंह तथा 'भारतोदय' कानपुर से बाबूसीतारा। इनसे पूर्व जितने भी समाचार पत्र इस दौर में प्रकाशित हुए लगभग सभी द्विभाषी थे। अंग्रेजों द्वारा बनाए नियमों एवं उपनियमों ने कभी भी भारतीय पत्रकारिता को पूर्ण विकसित होने ही नहीं दिया। ये सदैव समाचार पत्र व पत्रिकाओं पर कड़ी नजर व कड़ा नियन्त्रण रखते थे। 1898 में लार्ड कर्जन भारत के जब वायसराय बने तो ब्रिटिश सरकार का यह दौर शक्तिशाली दौर था। उस दौरान दो ही प्रकार के समाचार पत्रों का प्रकाशन होता था। 'अंग्रेजी एवं हिन्दी'। अंग्रेजी समाचार पत्रों का प्रकाशन अंग्रेजों द्वारा किया जाता था। जिन्हें एंग्लों इंडियन' अखबार कहा जाता था। इसके विपरीत दूसरे समाचार पत्र वे थे जिन्हें भारतीय द्वारा विभिन्न भारतीय भाषाओं व अंग्रेजी में प्रकाशित किया जाता था। यह वह समय था जब भारत में ही भारतीयों की जनसंख्या का एक बड़ा भाग अंग्रेजी को जानने वाला था। दूसरा कारण यह था कि अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित विषय को ब्रिटिश सरकार आसानी से समझ सकते थे। भारत की स्वतन्त्रता संग्राम में पत्रकारों एवं समाचार पत्रों का विशेष योगदान रहा है। यह बात अलग है कि 1857 में स्वतन्त्रता संग्राम तक समाचार पत्रों का प्रचार–प्रसार बहुत अधिक नहीं था। यह समय समाचार पत्रों की बाल्य अवस्था का समय था। उस दौर में औसतन 'समाचार चन्द्रिका' की 250 प्रतियॉ, 'बंगदूत' की 70 के लगभग, 'समाचार दर्पण' की 298, 'पूर्णचन्द्रोदय' की 100 के लगभग 'ज्ञाननेशन' की 200 लगभग ही प्रतियॉ प्रकाशित हो पाती थी। 'पयाम–ए–आजादी' सन् 1857 में प्रकाशित उर्दू तथा हिन्दी भाषा का समाचार पत्र जिसने अंग्रेजों की सरकार को हिला कर रख दिया जिससे घबरा कर उन्होंने इसे जब्त कर लिया। यदि इस समाचार पत्र की प्रति किसी व्यक्ति के पास मिल जाती थी तो उसे राजद्रोह के अपराध गिरफ्तार कर कठोर कारावास की सजा दी जाती थी। समाचार पत्रों में बन्धन लगाए जाने लगे थे। 'समाचार सुधावर्षण' हिन्दी 1857, 'दूरबीन' एवं 'सुलतान–उल–अखार' उर्दू 1857 पर यह अभियोग लगा कर मुकदमा चलाया गया क्योंकि इन समाचार पत्रों में अंग्रेजों को देश से बाहर निकाले जैसी बातों पर जोर दिया गया है। 'हिन्द पेट्रियट', प्रकाशन कलकत्ता, अंग्रेजी सरकार के विरूद्ध संघर्ष में नींव की ईंट साबित हुआ । इस समाचार पत्र के संस्थापक श्री गिरिशचन्द्र घोष थे एवं सम्पादक हरीशचन्द्र मुखर्जी थे। सन् 1861 में इस समाचार पत्र ने 'नील दर्पण' नाटक को अपने पृष्ठों में स्थान दिया जिसने भारतीय के बीच अंग्रेजों के विरूद्ध नील की खेती खत्म करने की चिंगारी सुलगाई जिसने एक आन्दोलन का रूप धारण कर लिया। इसी के फलस्वरूप ब्रिटिश सरकार द्वारा नील कमीशन का गठन किया गया। तत्पश्चात् श्री ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के हाथ में यह समाचार पत्र आ गया। श्री ब्रिस्टोदास पाल को इसका सम्पादक नियुक्त किया गया। इस समाचार पत्र ने ब्रिटिश सरकार की पक्षपात पूर्ण रवैये का विरोध किया। सरकारी नौकरियों में भारतीय के प्रवेश को मुख्य मुद्दा बनाया। इन्हीं दिनों अमृत बाजार पत्रिका का प्रकाशन जैसोर से हो रहा था। इस पत्र के संचालकों पर ब्रिटिश सरकार ने सरकारी कर्मचारियों की आलोचना करने का मुकदमा चलाया गया एवं कठोर कारावास की सजाऍ सुनाई गई। इतना ही नहीं अपितु 1878 को देशी भाषा कानून पास हुआ । पूना की सार्वजनिक सभा ने 1849 में 'ज्ञान प्रकाशन' का प्रकाशन किया। इस पत्र की लेखन शैली अत्यन्त प्रभावशाली थी। 1 जनवरी, 1881 को मराठी मे 'केसरी' और 'अंग्रेजी' में मराठा नाम के दो साप्ताहिक पत्र प्रकाशित किए गए। श्री विष्णु शास्त्री चिपलूणकर, श्री. जी.जी आगरकर और श्री बाल गंगा तिलक ने इसका प्रकाशन किया। 1920 में बनारस से 'आज' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के जन्म के समय सम्पादकों की प्रतिष्ठा अपनी चरम सीमा पर थी। श्रीमती एनी बेसेंट के शब्दों में ''जब हम उन सूचियों को देखते हैं कि कौन लोग उपस्थित थे और उनमें कितने ऐसे हैं। जो भारतीय स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में प्रसिद्ध हो गए। इनमें 'ज्ञान प्रकाश', पूना की सार्वजनिक सभा का 'क्वार्टरली जर्नल', 'मराठा', 'केसरी', 'नवविभाकर', 'इंडियन मिरर', 'हिन्दुस्तानी,' 'ट्रिब्यून', 'इंडियन यूनियन', 'इंडियन स्पैक्टैयर', 'इन्दु प्रकाश', 'हिन्दु और क्रीसेंट जैसे प्रसिद्ध भारतीय पत्रों के प्रमुख सम्पादकों का उल्लेख किया जा सकता है।''[5] यह निर्विवाद सत्य है कि पत्रकारिता और साहित्य का गहरा सम्बन्ध है। साहित्यकार और पत्रकार दोनों ही समसायिक परिवेश से किसी न किसी रूप में प्रेरणा ग्रहण करते हैं। दोनों ही लेखक भी हैं और सर्जक भी। अनाबिल दृष्टि, चिन्तन लेखन में प्रेषणीयता की शक्ति दोनों के लिए अपरिहार्य हैं। यह कहा जा सकता है कि प्रत्येक पत्रकार अंशतः साहित्यकार है तो प्रत्येक साहित्यकार अनिवार्यतः पत्रकार भी होता है। पत्रकारिता और साहित्य का सम्बन्ध अविछिन्न है। दोनों ही जीवन जगत् परिवेश–परिस्थितियों देश काल को अपनी कलम के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। प्रत्येक साहित्यकार किसी भी भाषा का क्यों न हो प्रथम पत्रकार होता है। या यूँ भी कहा जा सकता है कि पत्रकारिता साहित्यकार का प्रथम पग है। सर्वोतम पत्रकारिता और सर्वोतम साहित्य एक दूसरे के पर्याय हैं। यह इसलिए भी सिद्ध होता है क्योंकि दोनों ही विश्व की घटनाओं को गहराई से देखते परखते और उसकी अभिव्यक्ति अपनी लेखनी के माध्यम से करते हैं। ''पत्रकार के पास साहित्यकार की तरह ही सूक्ष्म दृष्टि होती है। पत्रकार जगत का सूक्ष्म दृष्टा होने के सिवा दूसरा है ही क्या? लौकिक और आलौकिक जगत मानव जीवन को जिस प्रकार प्रभावित करते रहते हैं और जिस प्रकार मानव उन्हें प्रभावित करता है उनका साक्षात्कार और चित्रण करना पत्रकार का मुख्य कार्य होता है।''[6] साहित्य बौद्धिक खाद है और जैसे खाद से विकास होता है वैसे ही साहित्य का अध्ययन प्रत्येक बुद्धिजीवी के लिए अनिवार्य है। ''अनेक तेजस्वी पत्रकार हुए जिन्होंने साहित्य के एक महत्वपूर्ण अध्याय का निर्माण किया। इतना ही नहीं बल्कि इन पत्रकारों में कुछ ऐसे ज्ञानी भी हैं जो सच्चे अर्थों में हिन्दी साहित्य के गौरव हैं।''[8] डॉ० एन.सी.

पंत लिखते हैं कि ''साहित्य और पत्रकारिता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। दोनों के उद्देश्य में अत्याधिक समानता है। अपनी विकसित अवस्था में दोनों के रूप भले ही नितान्त स्वतंत्र एवं अलग–अलग दिखाई देते हों, परन्तु मूलतः वे एकमात्र मुख्य हेतु 'सत्य की खोज' और 'सत्य की प्रस्थापना' के साथ जुड़े हुए होते हैं।''[9] प्रत्येक साहित्य कार के हृदय में कहीं न कहीं एक कोने में एक सृजक पत्रकार छिपा होता है। उसका मन सदैव इस बात के लिए छटपटाता रहता है कि तत्कालीन समाज की अच्छाइयों और बुराइयों को पाठकों के सामने उजागर कर सके। उसके मन की आकांक्षा होती है कि एक स्वस्थ समाज का निर्माण हो। जहॉ किसी का शोषण न हो, धन एवं बाहुबल से कोई किसी को दबा न सके। सब को स्वतन्त्र जीने और विचरण करने का अधिकार हो। पत्रकारिता को साहित्य के साथ इसलिए अभिन्न रूप से जोड़ते हैं कि साहित्य भी समय–समय पर ऊपर लिखित कसौटियों पर कसा जाता है। एकदृष्टि से पत्रकारिता साहित्य का प्रतिनिधित्व करती है। अधिकांश रचनाकारों की प्रारम्भिक रचना समाचार पृष्ठों के पन्नों पर प्रकाशित हुई हैं। हिन्दी की 'हरीशचन्द्र चन्द्रिका', 'सरस्वती', 'हॅस', 'माधुरी', 'चॉद', 'सुधा', 'मतवाला' जैसी पत्रिकाऍ और 'आज' से लेकर आज के नई दुनिया नवभारत टाइम्स जैसे पत्रों में सदा ही साहित्य ने प्रमुख स्थान पाया है इन्हीं पत्र और पत्रिकाओं के माध्यम से कितने अज्ञात लेखक पाठकों को ज्ञात हो सके हैं। एक दृष्टि से पत्रकारिता वह माध्यम है जो साहित्यकार की रचना को अनेक लोगों तक आसानी से और तत्काल पहुॅचा देता है। लेख, कहानी, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, रेखाचित्र इत्यादि एक ओर साहित्य के साथ जुड़ते हैं तो दूसरी ओर पत्रकारिता के साथ भी जुड़ते हैं। इसलिए श्रेष्ठ साहित्यकारों में पत्रकार का प्रतिरूप रहता है और श्रेष्ठ पत्रकार में साहित्यकार का रूप होता हैं बालकृष्ण राव का मत है कि ''समसामयिक परिवेश से किसी ने किसी रूप में प्रत्येक लेखक प्रेरणा ग्रहण करता है, चाहे वह साहित्यकार हो या पत्रकार। दोनों के कार्य किन्हीं ऐसे गुणों से परिपूर्ण हैं जो दोनों के लिए अपरिहार्य हैं। जैसे अनविल दृष्टि, चिन्तन, लेखन में प्रेषणीयता की शक्ति, दोनों देश और काल के आयामों पर अपनी–अपनी विशिष्ट परम्परा के अतिरिक्त उस संश्लिष्ट सांस्कृतिक परम्परा, उस सामाजिक चेतना प्रवाह से भी सम्बद्ध हैं जिससे उन्हें अपनी बात ओरों के प्रति निवेदित करने की प्रेरणा और शक्ति मिलती है। प्रत्येक पत्रकार अंशतः साहित्यकार भी हो तो प्रत्येक साहित्यकार अनिवार्यत पत्रकार भी।''[10] भावनाऍ जब धीरे–धीरे हृदय से निकलती हुई मन–मस्तिष्क से होकर बाहर आती हैं तो तब वह भाव बन जाती हैं एवं शब्द रूप ग्रहण कर लेती हैं। यह कोई यांत्रिक प्रक्रिया नहीं है। बल्कि यह एक ऐसी सहज और स्वाभाविक प्रवृति है। जिसे अभ्यास से आत्ससाद किया जा सकता है। जो स्वतः वह कर कविता, साहित्य, पत्रकारिता विभिन्न विधाओं को जन्म देती हैं। साहित्य सृजन कोई निर्जीव यांत्रिक प्रक्रिया नहीं है। इसे बने बनाये सांचे में से नहीं निकाला जा सकता। इसे बंदिशों, रूकावटों और पाबदियों में बॉधने से इस की स्वाभाविकता और मौलिकता नष्ट हो जाती है। भारत में साहित्य लेखन एक स्वतन्त्र प्रक्रिया है ये सभी प्रकार की रूकावटों से परे एक स्वतन्त्र और पावन सृजनात्मक प्रक्रिया है।''[11] साहित्य के माध्यम से आम आदमी की समस्याओं को समझना, उन्हें महसूस करना और समाज की समस्याओं को चुनौती मानकर उनसे दो हाथ करना, उन्हें अपने साहित्य में स्थान देना प्रत्येक साहित्यकार का मुख्य उद्देश्य होता है पत्रकारिता समाज में क्रान्ति लाने का सबसे बड़ा माध्यम होती है। डॉ० धीरेन्द्र गुप्त लिखते हैं ''साहित्यिक पत्रिका एक चुनौती के रूप में जन्म लेती है। यह चुनौती ही समाज में परिवर्तन का वातावरण तैयार करती है। यह सिर्फ कहानी और कविता के छापने के ही काम न आकर, गद्य की तेज तर्रार शैली में यह पूछने के काम भी आनी चाहिए कि स्वर्ण–अस्वर्ण का भेद, प्रान्तीयता का मोह, गरीब अमीर के बीच की खाई अंग्रेजी की हीनता आदि बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में ही कायम क्यों हैं?''[12] हिन्दी पत्रकारिता ने देश के विकास में अहम् भूमिका निभाई। हिन्दी दैनिकों के माध्यम से ही सम्पूर्ण देश में साहित्यिक जागृति आई है। आचार्य शिवपूजन सहाय लिखते हैं कि ''हिन्दी के दैनिकों ने जहॉ देश को उद्बुद्ध करने का अथक प्रयास किया है वहीं उन्होंने जनता में साहित्यिक चेतना को जागृत करने का श्रेय भी पाया है।''[13] पत्र–पत्रिकाऍ समाज में जागृति पैदा करती है। इन्हें ही एक स्वस्थ समाज निर्माण का श्रेय जाता है। ''कविता हो, चाहे अकविता हो, भूखी–पीढ़ी की कविता हो या अन्य वाद–विशेष से सम्बद्ध हो, साथ ही साहित्यिक नारों को जन्म देने और उनका प्रचार–प्रसार करने का काम पत्र–पत्रिकाऍ करती आयी हैं। साहित्य बौद्धिक खाद है और यह प्रत्येक बुद्धिजीवी के लिए अनिवार्य आवश्यकता है। अतः साहित्य सृजन की दृष्टि से पत्र–पत्रिकाओं का बड़ा महत्व हैं।''[14] प्रत्येक साहित्यकार को चाहिए कि वह सजग पत्रकार बनकर अपनी ऑखों को खुली दृष्टि दें। समाज की समस्याओं को महसूस करे। इन समस्याओं से जूझ रही पीढ़ियों को अपनी लेखनी के माध्यम से जग जाहिर करे तथा तत्कालीन समाज को सोचने पर मजबूर कर दें। प्रत्येक साहित्यकार एवं पत्रकार का यह दायित्व है कि वह समाज को सही जीने की राह दिखाए । ''साहित्यिक पत्रकारिता की कोई सार्थकता तभी होगी जब वह अपने समय की महत्वपूर्ण सर्जना को सामने लाने के साथ ही व्यापक लेखकीय और रचनात्मक समस्यओं से जूझे।''[15]यदि देखा जाए तो साहित्य और पत्रकारिता दोनों ही एक दूसरे के अभिन्न अंग हैं। आधुनिक हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता में साहित्य के सभी अंगों के दर्शन होते हैं। कविता, कहानी, एकांकी, रेडियों, रूपक, फीचर, निबन्ध, इंटरव्यू के अलावा समाचार, टिप्पणियॉ, संक्षिप्त लेख रेखाचित्र, हास्य व्यंग्य लेख, पुस्तक समीक्षा व्यंग्य चित्रादि सभी कुछ तो पत्रिकाओं में रहता है। साहित्यिक पत्रिकाओं में नई से नई विधा के दर्शन हो जाते हैं।''[16] डॉ० श्याम सिंह शशि एक प्रबुद्ध साहित्यकार ही नहीं अपितु प्रबुद्ध पत्रकार भी हैं। पत्रकारिता उनके हृदय में कूट–कूट कर भरी हुई है। जो कि यत्र–तत्र सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है। अपनी शिक्षा ग्रहण के उपरान्त डॉ० शशि अपने जीवन का प्रारम्भ पत्रकारिता से किया। '' 1957 में शशि देहरादून में

सामाजिक कार्यकर्ता और पत्रकार के रूप में काम करते रहे, जो समाज कल्याण की एक संस्था थी। यहॉ आप विनोबा भावे, जवाहर लाल नेहरू, राजेन्द्र प्रसाद, इन्दिरा गांधी आदि नेताओं के सम्पर्क में आए। आदिवासियों तथा पर्वतीय समाज पर शोध की प्रेरणा पण्डित धर्मदेव शास्त्री के सम्पर्क से मिली ।''[17] डॉ० श्याम सिंह शशि को पत्रकारिता से अगाध प्रेम था। दलितों, गरीबों, यायावरों के हक के लिए लड़ना उनके कलम उठना वे अपना प्रथम धर्म मानते थे। जीवन भर बुलन्दियों और सफलताओं को श्याम सिंह शशि प्राप्त करते रहे। एक के बाद एक सम्मानों के ढेर लगते गए। ख्याति आसमान को छूती रही। परन्तु जीवन भर दम्भ उनमें लेस मात्र भी नहीं रहा। ''बहुत ऐसे व्यक्ति होते हैं जो डेल कार्नेगी के बताये हुए नुस्खों के अनुसार चलने का प्रयत्न करते हैं। वे लोगों से मुस्कराकर बातें करते हैं और यह आभास देते हैं कि उनका काम करने में कोई कसर नहीं छोड़ेगे। पर यह सबके लिए सम्भव नहीं होता कि सबको खुश करें। धीरे–धीरे वह जिन लोगों को प्रभावित करना चाहते हैं। उन्हीं में उनका असर कम होता चला जाता है और लोगों को उनकी बातचीत, हंसी और मुस्कराहट बनावटी और कड़वी लगने लगती है। डॉक्टर शशि का व्यवहार इस प्रकार का नहीं है। उनकी हॅसी बनावटी नहीं, हृदय से निकलती हुई, प्रफुल्ल होती है और यदि अप्रिय बात भी कहनी हो तो उसे कहने में वे चूकते नहीं, भले ही उनके कहने का ढंग आक्रमणकारी न हो। अपने दोष जानने में वे सर्तक रहते हैं और इतनी सफलता प्राप्त होने के बाद भी उनमें यह अंहकार नहीं आया है कि जिस उम्र में और जिस थोड़े समय में उन्होंने जो पद संभाले हैं, वह दूसरे ने नहीं संभाले थे। विद्या के साथ विनय उन्हें प्राप्त हुआ है और यह प्रत्येक मानव के लिए लाभकारी है पत्रकार के लिए तो और भी अधिक। वे खूब पढ़ते हैं इसलिए उनकी जानकारी भी विस्तृत है और कहने का ढंग मोहक । हमारी यही शुभ कामना है कि यह मनमोहक व्यक्तित्व दिनोंदिन हिन्दी की सेवा करते हुए पत्रकारिता का नाम उज्ज्वल करे।''[18] डॉ० श्याम सिंह शशि के प्रवृति जिज्ञासू है। नई–नई चीजों को जानने की ललक सदैव उनमें जागृत होती रहती है। एक पत्रकार व साहित्यकार की यह सबसे बड़ी खूबी होती है। भाषा के वे महारथी हैं हिन्दी व अंग्रेजी दोनों पर उनकी समान रूप से पकड़ है–– ''एक दूसरा पहलू यह भी है कि वे स्वतन्त्र लेखक और कवि हैं। रोमा जाति के ऊपर उन्होंने अनुसंधान किया और शिक्षा की दृष्टि से वे नृवंश शास्त्री हैं। उनकी पुस्तकें अपने विषय की प्रमाणिक पुस्तकें मानी जाती है और उन्होंने हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में लिखा है। लेकिन जब वे इन विषयों पर समाचार पत्रों में लिखते हैं।तो उनकी शैली बड़ी आकर्षक, दृष्टि बड़ी पैनी और कथोपकथन बड़ा स्वाभाविक; बिना किसी बनावट के होता है। सफल लेखक या सफल पत्रकारिता के लिए यह एक आवश्यकत शर्त है। डॉक्टर शशि इस कसौटी पर पूरे उतरते हैं।''[19] डॉ० श्याम सिंह शशि ने कई विभागों में कार्य किया। कई पत्र–पत्रिकाओं को अपनी लेखनी का चमत्कार दिखाकर पाठकों को प्रभावित किया। उन्होंने सैनिक समाचार के सम्पादक के रूप में कार्य कर अपने विचारों से सदैव सैनिकों के मनोबल को बढाया। डॉ० शशि और पत्रकारिता शीर्षक में डॉ० शशि के विषय में जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी लिखते है कि '' लगभग बीस वर्ष पहले जब डॉक्टर शशि से मेरा प्रथम परिचय हुआ। तब से अब तक वे सफलता की एक के बाद एक सीढ़ियों को पार करते गये हैं और अब भारत सरकार के प्रकाशन विभाग को और भी ऊँचाइयों पर पहुँचाने के लिए कार्यरत हैं।''[20] डॉ० श्याम सिंह शशि ने यायावरों पर इतना लिखा कि शब्दों में लिखना असम्भव नहीं तो अति कठिन है। उनके यायावरों से इतना मोह है कि वे उनकी खोज में हिमालय की चोटियों से लेकर अनेक देशों में घूमते रहते हैं। विदेश भ्रमण का उनका उद्देश्य मात्र यायावर संस्कृति को खोज निकालना होता ताकि यायावरों को विश्व के मान चित्र पर एक पहचान दी जा सके। दुनिया को यह बताया जा सके कि बोरिया बिस्तर साथ लेकर घूमने वाले वे लोग चोर और लुटेरे नहीं हैं। अपितु यह उनकी संस्कृति है। अपवाद तो प्रत्येक समाज और समुदाय में होते हैं। ''शशि जी प्रख्यात यायावर भी हैं। विदेशों में लोग जाते हैं या तो उद्योग और खनिज व्यापार के सिलसले में, या उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए, या महज सैर सपाटा करने के विचार से। कई तो वहॉ विलासिता में डूब जाते हैं और कई ऐसे भी होते हैं जो वहीं बस जाते हैं। बिरले ही ऐसे होते हैं जो अपने देश का उत्तमांश वहॉ जाकर देते हैं और वहॉ का उत्तमांश अपने देश में ले जाते हैं।''[21] डॉ० श्याम सिंह शशि की साहित्यिक कृतियॉ हो या फिर पत्रकारिता। प्रत्येक विधा में यायावरों के प्रति दर्द का अहसास स्वच्छन्द एवं मुक्त रूप से स्पष्ट झलकता है। यायावरों के लिए एक अजीब सी कसक स्पष्ट झलकती है ''यह कहना कठिन है कि शशि जी नृतत्व, समाज विज्ञान, कविता, पत्रकारिता और प्रशासन आदि के विभिन्न क्षेत्रों में से किसमें अधिक लोकप्रिय हैं? सभी क्षेत्रों में उन्होंने इतना अधिक काम किया है कि वे किसी भी क्षेत्र की तुलना में कम नहीं ठहरते। यही कारण है कि वे जहॉ आर्यसमाज के क्षेत्र में अपना विशिष्ट स्थान बना चुके हैं वहॉ साहित्य का क्षेत्र भी उनकी सेवाओं से पूर्णतः लाभान्वित हुआ है। वे समाजशास्त्रियों में उत्कृष्ट समाजशास्त्री हैं और कवियों में संवेदना और अनुभूति के अनुष्ठाता सहृदय कवि तकनीकी शब्दावली के निर्माण की प्रक्रिया का परिचय आपने जहाँ केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय को दिया वहॉ रक्षा मंत्रालय के सैनिक समाचार नामक पत्र का सम्पादन करके पत्रकारिता के क्षेत्र में भी नये आयाम उद्घाटित किये हैं। सारांशतः वे कुशल शिक्षक, लेखक, कवि, पत्रकार, सैन्य विशेषज्ञ, नृतत्वशास्त्री और प्रकाशक सभी कुछ है। यदि ऐसा ना होता तो आप आज प्रकाशन विभाग के निदेशक के रूप में कैसे प्रतिष्ठित होते? इस सबके पीछे इनकी अध्यायवसायिता, कर्म–तत्परता, ध्येय स्पष्ट झलकता और लक्ष्य पूर्ति के प्रति पूर्ण समर्पण की भावना ही प्रमुख रही है। वस्तुतः डॉ० शशि समर्पण भावना के अनुप्रेरित लोकप्रियता के आधारभूत स्तम्भ हैं।''[22]पत्रकारिता को अंग्रेजी में जर्नजिल्म कहा जाता है जो जर्नल शब्द से उत्पन्न हुआ है। युवा लेखक एवं पत्रकार डॉ० महासिंह पूनिया के शब्दों में ''जर्नल शब्द की उत्पति लेटिन भाषा के शब्द 'द जर्नल' से हुई, जिसका

अभिप्राय दैनिक सूचना से है। जबकि जर्नल का अर्थ है एक निश्चित समय से प्रकाशित होने वाला सूचना पत्र। फ्रेंच भाषा के जर्नल का अर्थ दैनिक अथवा प्रतिदिन है। इंग्लैड व फ्रांस में 17वीं शताब्दी में जर्नल का उपयोग समाचार पत्र और पत्रिका के लिए होता था बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में जर्नल शब्द को विवेचनापूर्ण एवं गम्भीर विषयों के प्रकाशन के लिए उपयोग किया जाने लगा।''[23] विचारणीय है कि ''वर्ष 1988 तक समूचे विश्व में 4900 समाचार पत्र बेव पर उपलब्ध थे। इनमें से अकेले अमेरिका से 2800 समाचार पत्र प्रकाशित किए जा रहे थे। इसके अतिरिक्त वर्ष 1996 तक पत्रिकाएँ छापने वाली कम्पनियों ने भी लगभग 1300 वेबसाइटें तैयार कर ली थी। न्यूजलिंक के अनुसार 1996 के अंत तक अमेरिका की 50 प्रमुख पत्रिकाओं में से 23 के आनलाइन संस्करण उपलब्ध थे।''[24] इंटरनेट पत्रकारिता के अन्तर्गत ऑनलाइन समाचार–पत्र और वेब पत्रिकाएँ शामिल है। रेडियों एवं टी.वी. पत्रकारिता भी पूरी तरह इलेक्ट्रानिक माध्यमों से की जाती है। अपनी पुस्तक बिल गेटस में बिल गेटस लिखते है कि "We are experiencing the early days of a revolution in communication that will be long lived and wide spread. There will some surprise before we get to the ultimate realization of the information highway because much is still unclear. We don't understand consumer proferences yet. The role of government is a troubling open question. We can't anticipate all of the technical break throughs that lie ahead. But interactive networking is here to stay, and its only just beginning."[25] वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक महा सिंह पूनिया लिखते हैं किः– ''आज पत्रकारिता सूचनाओं और समाचारों का संकलन मात्र न होकर मानव जीवन के व्यापक परिदृश्य को अपने में समेटे हुए हैं। वह शाश्वत नैतिक सांस्कृतिक मूल्यों को समसामजिक घटनाचक्र की कसौटी पर कसने का साधन बन गयी हैं। ज्ञान–विज्ञान, साहित्य, संस्कृति, आशा, निराशा, संघर्ष, क्रान्ति, जय–पराजय, उत्थान पतन आदि जीवन का विविध भाव भूमियों की मनोहारी एवं यथार्थ छवि हम युगीन पत्रकारिता के दर्पण में देख सकते हैं।''[26] यायावरी पत्रकारिता से अभिप्राय है उन यायावरों पर प्रकाश डालना जो सदियों से इस जंगल से उस जंगल, एक देश से दूसरे देश में भटक रहें हैं। उनके जीवन, उनकी प्रवृति, उनकी समस्याओं, को अपनी कलम के माध्यम से सरकार तथा आम–आदमी तक पहुँचाना यायावरी पत्रकारिता कहलाती है। डॉ० श्याम सिंह शशि ने यायावरों के साथ को स्वयं उनके बीच रह कर महसूस किया। पत्र–पत्रिकाओं में उनके विषय में खूब लिखा। उन पर विस्तृत शोध साहित्य दिया। ''हिमालय के यायावरों के दुख–दर्द देखे–पढ़े, महसूसे और लिखता रहा वर्षों तक उन्हें पत्र–पत्रिकाओं में, पुस्तकों में। गद्य और पद्य दोनों में। पर मन नहीं भरा और फिर चल पड़ा विश्व के यायावरों को ढूँढने।''[27] कन्दरों में छुपे यायावरों को डॉ० श्याम सिंह शशि ने अनेक समाचार पत्रों में स्थान दिया। अपने साहित्य का हिस्सा बनाया । उनके जीवन की वास्तविकताओं को पाठक के सामने लाने का प्रयत्न किया है और उनके पक्ष में खूब लिखा है। कपोलकल्पित नहीं अपितु उनके साथ रह कर सब कुछ भोगकर यायावरी पत्रकारिता को जन्म दिया है। ''––––और इसी बिडम्बना को रेंगता है बेचारा यायावर, जिसे कुछ लोग खानावदोश जंगली या असभ्य तक कह देते हैं।''[28] डॉ० श्याम सिंह शशि एक प्रबुद्ध साहित्यकार ही नहीं अपितु प्रखर पत्रकार भी हैं। बचपन के दिनों से ही वे अनेक पत्र–पत्रिकाओं से जुड़ चुके थे। सन् 1968 में वे भारत सरकार के सुप्रसिद्ध पत्र सैनिक समाचार के सम्पादक नियुक्त हुए। डॉ० शशि देहरादून से प्रकाशित हिमालय मासिक पत्रिका के भी सम्पादक रहे। 'वन्य जाति' 'कन्टेम्परेरी सोशल सांइसेज', 'शब्द लता' आदि विभिन्न पत्रिकाओं के सम्पादन मंडल में भी रहे। शीर्षक डॉ० शशि और पत्रकारिता में जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी डॉ० शशि के विषय में लिखते हैं। ''कुछ तथ्य छूट गए। शशि जब डाक्टर नहीं थे, फ्री लासिंग पत्रकारिता भी करते रहे। उन्होंने कितने ही इन्टरव्यूह, फीचर, लेख और यदा कदा कालम भी लिखें हैं। देहरादून से प्रकाशित 'हिमालय' मासिक पत्रिका के वे सम्पादक रहे हैं। 'वन्यजाति', अनुवाद, कन्टेम्परेरी सोशल सांइसेज शब्दलता, आदि पत्रिकाओं के सम्पादक मण्डल में रहे हैं। सरकारी स्तर पर आप आज भी 21 पत्र–पत्रिकाओं के प्रमुख हैं। आजकल (उर्दू–हिन्दी) बाल भारती, योजना (12 भाषाओं में प्रकाशित), कुरुक्षेत्र (हिन्दी–अंग्रेजी), इंडियन फोरम रिव्यू, एम्प्लाय मेंट न्यूज, रोजगार समाचार आदि पत्रों का मार्गदर्शन करते हैं। अन्य मंत्रालयों के अनेक पत्र–पत्रिकाओं के परामर्शदाता मण्डल में हैं। हॉ, पत्रकारिता उन पर हावी नहीं हुई, क्योंकि उनका कवि और सर्जक सदैव क्रियाशील रहा हैं लेकिन इन गुणों ने पत्रकारिता को संवरने में योगदान दिया, यह क्या कम हैं।''[29] डॉ० श्याम सिंह शशि पत्र–पत्रिकाओं से बाल्यकाल से ही जुड़ गए थे। उनकी बाल्यकाल में सृजित की गई कविताओं को पत्र–पत्रिकाओं में खूब स्थान मिलता था। उसी समय से पत्रकारिता के प्रति उनमें रूझान पैदा हो गया था। धीरे–धीरे वे साहित्य साधना में वे इतने लीन हो गए कि बाल्यकाल की पत्रकारिता का यह अंकुर एक विशाल वट वृक्ष बन गया जिसकी टहनियॉ पत्रकार प्रकाश और लेखक के रूप में चारों तरफ फैल गई हैं। ''अब वे बहुत व्यस्त हैं उनका काफी समय मंत्रालय तथा अन्य विभागों के साथ हुई मीटिंगों में व्यतीत होता है यदि यह कहा जाए कि वे अब पत्रकार से प्रकाशक हो गये हैं तो इसमें कोई तथ्यात्मक अशुद्धि नहीं होगी। परन्तु संवेदना से वे अभी भी वहीं और वैसे ही पत्रकार हैं जैसे वे तब थे ।''[30] डॉ० श्याम सिंह शशि की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि एक नहीं अनेक भाषाओं में लेखन पत्रकारिता की। हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा के वे महारथी हैं। स्वयं यायावर बनकर, उनके बीच रह कर, हिमालय की खड़ी चढ़ाई पर चढ़कर, उनके जैसा जीवन व्यतीत कर डॉ० शशि ने एक नई विद्या यायावरी पत्रकारिता को जन्म दिया है। यायावरों के दुख दर्द को, उनके आस्तित्व की कहानी को आम आदमी तक पहुँचाता है। या यूँ कह लिया जाए कि यायावरी पत्रकारिता जन्मदाता डॉ० श्याम सिंह शशि है तो इसमें मतभिन्नता ना होगी। यदि डॉ० श्याम सिंह शशि के सम्पादकीय पुस्तकों व सम्पूर्ण साहित्य को पढ़ा जाए तो उसमें यायावरों के प्रति एक वेदना कहीं न कहीं जरूर

झलकती है। आज साहित्य और पत्रकारिता का उद्देश्य मात्र सूचना देने तक सीमित नहीं हैं इसके क्षेत्र, परिभाषाएँ मापदण्ड आकलन, विशेषण कार्यशैली सब कुछ बदल गया है। आज के मानव की चेतना परिकल्पनात्मक हो गई है। इसके पीछे इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों एवं पत्रकारिता को नकारा नहीं जा सकता है। इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता से अभिप्राय है कि आधुनिक एवं इलेक्ट्रॉनिक संचार प्रौद्योगिकी पर आधारित तकनीकों, रेडियों टी.वी. इंटरनेट इत्यादि तकनीकों के प्रयोग साथ की जा रही पत्रकारिता। जो गहरा प्रभाव समाज पर छोड़ती है। नोबेल विजेता व प्रख्यात साहित्यकार वी.एस. नॉयपाल की पत्नी विद्या ने पत्रकार फारूक ढोंडी को दिये साक्षात्कार में कहा था कि टेक्नॉलोजी के इस युग में बुद्धिजीवियों की कोई आवश्यकता नहीं है। "I feel technology takes over and becomes the complete intellectual life. The email, the mobile phone, the gadgets people adore playing with, they are open to every body who can afforded them to the monkey with the palm pilot. The T.V. gives us the news it gives us fifty stories a day in the soaps and hours and hours of commentary on the news writers become redundant."[31] इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की परिभाषा 'एनटीसीज मीडिया शब्द कोश ने इस प्रकार वर्णित हैं। "The mass: Radio, Television, cable television, direct broadcast satelities and so on."[32] वरिष्ठ लेखक डॉ० कृष्ण कुमार रतू इलेक्ट्रानिक पत्रकारिता के महत्व पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं कि ''इस बदलती हुई सदी के इन दिनों में समाज बदलाव में दृश्य–श्रव्य एवं जनसंचार माध्यमों की भूमिका इतनी सशक्त है कि पिछले दिनों अमेरिका में हुए आंतकवादी हमलों के बाद अमेरिका के राष्ट्रपति बुश को भी यह कहना पड़ा कि हम आधुनिक युद्ध की तकनीकों के साथ–साथ आतंकवादी विरोधी इस अभियान में दृश्य श्रव्य एवं जनसंचार माध्यमों का प्रयोग जिस भी तकनीक से, जहॉ पर भी किया जाना सम्भव होगा, करेंगे। इसका सीधा अर्थ यह माना जा सकता है कि दृश्य श्रव्य एवं जनसंचार माध्यमों की शक्तिशाली छाप, जनमत प्रभाव को आकर्षित करने की ताकत कितनी विलक्षण और आधुनिक है कि इन माध्यमों को अब एक हथियार की तरह भी प्रवर्तनीय भूमिका में कार्य में लिया जा सकता है।''[33]

निष्कर्ष

डॉ० श्याम सिंह शशि ने पद्य और गद्य में बहुत कुछ लिखा। यह भी कहा जा सकता है कि उनका साहित्य सत्यं, शिवं और सुन्दरम् का समिश्रण है। ऐसा शायद ही कोई क्षेत्र हो जिस पर डॉ० श्याम सिंह शशि ने कार्य न किया हो। उनकी घुमन्तु प्रवृति ने आज उन्हें उच्च साहित्यकारों की श्रेणी में ला खड़ा किया है। उन्हें साहित्य गगन का ध्रुव तारा भी कहा जा सकता है। जैसे रात्रि में ध्रुवतारा भटकते जाहजों को रास्ता दिखाता है। ठीक वैसे ही डॉ० शशि भटकते साहित्यकारों का मार्ग दर्शन करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 *भारत में पत्रकारिता :– अलोक मेहता पृष्ठ संख्या 12*
2 *भारत में पत्रकारिता :– अलोक मेहता पृष्ठ संख्या 13*
3 *भारत में पत्रकारिता :– अलोक मेहता पृष्ठ संख्या 13*
4 *भारत में पत्रकारिता :– अलोक मेहता पृष्ठ संख्या 15*
5 *भारत में पत्रकारिता :– अलोक मेहता पृष्ठ संख्या 19*
6 *स.एनं.सी.पंत मनोज कुमार (हिन्दी की पत्रकारिता की रुपरेखा पत्रकारिता के मूल सिद्धान्त–खण्ड़–2), पृष्ठ संख्या 7*
8 *स.एनं.सी.पंत मनोज कुमार (हिन्दी की पत्रकारिता की रुपरेखा पत्रकारिता के मूल सिद्धान्त–खण्ड़–2), पृष्ठ संख्या 19*
9 *स.एनं.सी.पंत मनोज कुमार (हिन्दी की पत्रकारिता की रुपरेखा पत्रकारिता के मूल सिद्धान्त–खण्ड़–2), पृष्ठ संख्या*
10 *स.एनं.सी.पंत मनोज कुमार (हिन्दी की पत्रकारिता की रुपरेखा पत्रकारिता के मूल सिद्धान्त–खण्ड़–2), पृष्ठ संख्या 6–7*
11 *डॉ. धमेन्द्र गुप्त, 'लधु पत्रिकाएँ और साहित्यक पत्रकारिता', पृष्ठ संख्या 52*
12 *स. वेद प्रताप वैदिक –'हिन्दी पत्रकारिता विविध आयाम', पृष्ठ संख्या 310*
13 *स.एनं.सी.पंत मनोज कुमार (हिन्दी की पत्रकारिता की रुपरेखा पत्रकारिता के मूल सिद्धान्त–खण्ड़–2), पृष्ठ संख्या 19*
14 *डॉ. केशवानन्द ममगई – 'हिन्दी के विकास में हरियाणा का योगदान', पृष्ठ संख्या 13*
15 *स.डॉ.सूर्य प्रसाद दीक्षित–'हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता', पृष्ठ संख्या 19*
16 *डॉ. शक्ति बुद्धिराजा – 'पत्रकारिता की रुपरेखा', पृष्ठ संख्या 70*
17 *श्याम सिंह शशि का काव्य – चेतना और शिल्प – डॉ. मीना यादव, पृष्ठ संख्या 8*
18 *श्याम सिंह शशि का सृजन मूल्यांकन – जसपाल तरंग, पृष्ठ संख्या 195*
19 *श्याम सिंह शशि का सृजन मूल्यांकन–जसपाल तरंग, पृष्ठ संख्या 194–195*
20 *श्याम सिंह शशि का सृजन मूल्यांकन – जसपाल तरंग, पृष्ठ संख्या 195*
21 *श्याम सिंह शशि का सृजन मूल्यांकन – जसपाल तरंग, पृष्ठ संख्या 273*
22 *श्याम सिंह शशि का सृजन मूल्यांकन – जसपाल तरंग, पृष्ठ संख्या 279*
23 *डॉ. महासिंह पूनिया – 'पत्रकारिता का बदलता स्वरूप' संस्करण 2004*
24 *ओम गुप्ता, अजय एस. जसरा,इटरनेट जर्नलिज्म इन इड़िया द्वितीय संस्करण 2002*
25 *बलि गेटस , द रोड़ अहैड़ , इंगलैंड़ संस्करण 1195, पृष्ठ संख्या 38*
26 *डॉ. महासिंह पूनिया – 'पत्रकारिता का बदलता स्वरूप' संस्करण 2004*
27 *'हिमालय के यायावर' – श्याम सिंह शशि – पृष्ठ संख्या 2*
28 *'हिमालय के यायावर' – श्याम सिंह शशि – पृष्ठ संख्या 2*
29 *श्याम सिंह शशि का सृजन मूल्यांकन – जसपाल तरंग, पृष्ठ संख्या 195*

30 *श्याम सिंह शशि का सृजन मूल्यांकन – जसपाल तरंग, पृष्ठ संख्या 194*
31 *फारूक ढ़ोंडी ,तहलका,द पीपल्ज पेपर ,14 फरवरी 2004, पृष्ठ संख्या 27 कॉलम –3*
32 *आर.टेरी एलमोर, एनटीसीज मास मीड़िया डिक्शनरी , संस्करण 1990 ,यू.एस.ए.*
33 *डॉ. कृष्ण कुमार रतु – 'दृश्य–श्रव्य जनसंचार माध्यम', पृष्ठ संख्या 30*